Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity
ISSN: 2279-0233
Continuous issue-5 | January – March 2016

परिवर्तित मूल्य और ज्ञानरंजन की कहानियाँ

समकालीन कहानीकारों में ज्ञानरंजन का अपना एक अलग ही स्थान है। ज्ञान की कहानियों में युग बोध और परिवर्तित परिवेश और मूल्यों को अलग ही अंदाज से प्रस्तुत किया गया है । महानगरीय जीवन और उसका युग बोध ज्ञानरंजन का प्रिय विषय होने के कारण अधिकांश कहानियाँ महनगरीय जीवन यथार्थ का सजीव चित्रण करती हैं। महनगरीय जीवन में व्याप्त तमाम प्रकार की विसंगतियाँ, व्यथा, पीड़ा, निराशा, संत्रास, तनाव, अकेलापन, अजनबीपन एवं इन सबमें से उत्पन्न कुंठा वहाँ के व्यक्ति को समाज जीवन से दूर कर उसे बंद कमरों के अंदर कैद कर देती है। इन बंद कमरों में कैद मनुष्य आज संवेदन शून्य एवं अलगाववादी जीवन जीने के लिए मजबूर होता जा रहा है। इसके फलस्वरूप मानवीय मूल्यों में परिवर्तन आता है और विघटन की प्रक्रिया शुरू होती है। ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों के माध्यम से इन्हीं को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है।

आदर्श और यथार्थ का परस्पर द्वंद्व समकालीन कहानी में नजर आता है। एक तरफ संस्कार से प्राप्त आदर्श जीवन जीने के मूल्य हैं तो दूसरी तरफ यथार्थ है जो जीवन को किसी भी तरह से जीने के लिए, भोगने के लिए हर क्षण अपने लिए हो; की तरफ खींचता है। इसके फलस्वरूप पीढ़ियों में द्वंद्व शुरू हो जाता है । वर्तमान पीढ़ी के पास न तो ऐसे कोई उच्च जीवन आदर्श हैं और न ही ऐसा कोई यथार्थ जिसके सहारे वह अपना जीवन सफल बना सके। इसी शंकाओं–कुशंकाओं के दौर में वह जीता है और एक नए भावबोध को जन्म देता है। ज्ञानरंजन की कहानियों के अधिकांश पात्र भी इसी दुविधा के शिकार नजर आते हैं। **'पिता'** कहानी में दो पीढ़ियों का संघर्ष दिखाई देता है तो अमरूद के पेड़ में परंपरा से विरोध का स्वर मुखर होता है। यह संघर्ष या विरोध ज्ञानरंजन में अचानक ही नहीं आ जाता बल्कि काफी समय से आ रहे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक जीवन में आ रहे परिवर्तनों के प्रभाव से आता है। यही प्रभाव उन्हें नए भाव-बोध को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। और यही भाव-बोध उन्हें परिवर्तित हो रहे मूल्यों को भी स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। ज्ञान ने न केवल नए मूल्यों को स्वीकार ही किया है अपितु इन नए परिवर्तनों के माध्यम से भावी पीढ़ी को एक नई दिशा दृष्टि भी प्रदान की है।

ज्ञानरंजन का रचना संसार मध्यवर्गीय संसार ही रहा है इसलिए इनके मूल्य भी मध्यवर्गीय मूल्य हैं जिनमें क्रमशः परिवर्तन आता रहता है। एक प्रश्न सहज रूप से सामने आता है कि मध्यवर्ग के मूल्यों में परिवर्तन का मूलभूत कारण क्या हैं? ज्ञान की कहानियों का अध्ययन और विश्लेषण करने पर यह बात सामने आती है कि यह परिवर्तन आयात किया हुआ परिवर्तन है। मध्य वर्ग उच्च वर्ग के जिस रहन सहन या उनके जीवन मूल्यों को देखता है उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। परंतु यह उसकी विडम्बना है कि वह उन्हे पूर्ण रूप से अपना नहीं पाता और न ही

अपनी मध्यवर्गीय मानसिकता को बदल पाता क्योंकि उसकी परिस्थितियाँ इन परिवर्तनों के अनुकूल नहीं होती । फलस्वरूप दो वर्गों के मूल्यों के बीच संघर्ष शुरू होता है और संघर्ष के द्वंद्व में ही मूल्य परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू होती है। ज्ञान की कहानियों में जहाँ जहाँ इन परिवर्तनों की सूचना मिलती है वहाँ ऐसी ही परिस्थियाँ होती हैं। ज्ञानरंजन की कहानियों में मूल्य परिवर्तन कई स्तरों में देखने को मिलता है । वर्तमान समय में जिन स्तरों में मूल्य परिवर्तन हुये हैं, उन सभी को किसी न किसी रूप में ज्ञान की कहानियों में अभिव्यक्ति मिली है । मुख्यतः ज्ञान की कहानियों मे जिन परिवर्तित मूल्यों की बात की जाती है उनमें जीवन मूल्यों में परिवर्तन, पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन, दो परस्पर पीढ़ियों में परिवर्तन, प्रेम एवं दांपत्य मूल्यों में परिवर्तन, सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन और मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन की बात ही अधिक की जाती है ।

मनुष्य स्वभाव से ही सुविधाभोगी है। अपने जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए ही मूल्यों की रचना की। ये मूल्य उसके जीवन-संबंधी दृष्टिकोण को निरंतर एक नवीन दृष्टि देते रहते है, परंतु कभी कभी व्यक्ति अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए इन मूल्यों को अपने अनुसार बनाने का प्रयास भी करता है और इनमें परिवर्तन करता है। **'क्षणजीवी** कहानी में भी मुख्य पात्र मूल्यों को अपने अनुसार ढालने का प्रयास करता है । पूरी कहानी में वह अपने चरित्र बोध या जीवन बोध में आशा निराशा का जिस प्रकार अंतर लाता है वह उसके जीवन मूल्यों के परिवर्तन का सूचक है। शांति जिससे वह कभी प्रेम करता था उसकी शादी होने के बाद उससे सहज रूप से मिल नहीं पाता। यहाँ तक कि उसकी मानसिकता भी उसके प्रति बिलकुल बदल सी जाती है । मनीआर्डर समय से न मिल पाने के कारण उसकी दृष्टि में स्वयं का पिता दुनिया का सबसे बेकार और व्यर्थ का व्यक्तित्व लाग्ने लगता है। पिता के बारे में वह यहाँ तक सोंच जाता है –

" भगवान करे यह बुड्ढा मर ही जाए। मैंने सोंचा कि मान लो कल रात उसे खांसी उठी हो और उसने दम तोड़ दिया हो, थोड़ी देर बाद घर पहुंचेने पर मुझे मौत का निर्दयी तार मिले, फिर?"1 इतना ही नहीं वह स्वयं कि जिंदगी के बारे में भी निराश हो जाता है और सोंचने लगता है कि उसकी जिंदगी के कुछ हिस्से खुद ब खुद कम हो जाएँ – " **मैं कैसे उम्र के उस अंश को फलांग लूँ जिसमें लिपटकर जीने कि इच्छा होती है। काश, जिंदगी के बीच के कुछ स्टेज लुप से कहीं बिला जाएँ। ...... मेरी रोमावलियों ने ज्यों मुर्दा रहने की कसम खा रखी है। विद्रोह कर दिया है । शायद जीवन से छूटा हुआ हूँ ।**" यहाँ इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि "**मैं**" अपने वर्तमान जीवन से संतुष्ट नहीं है। वह जीवन में नवीन मूल्यों की तलाश करता है जो उसके अहं को संतुष्टि प्रदान करें। इसी के कारण वह पिता, बहन, प्रेमिका, समाज, शासनतन्त्र आदि के प्रति क्रांतिकारी दृष्टिकोण अपनाता है लेकिन वह उनका विरोध खुलकर नहीं कर पाता केवल मन में ही कर पता है। इस प्रकार यह कहानी जीवन-मूल्यों में आए हुये परिवर्तनों को प्रतिबिम्बित करती है ।

वैज्ञानिक विचारधारा एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से भारतीय पारिवारिक मूल्यों में किस प्रकार का परिवर्तन आया है, यह **'कलह', 'फेंस के इधर और उधर', 'शेष होते हुये', 'संबंध','पिता', 'यात्रा', 'मनहूस बंगला'** आदि कहानियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन कहानियों में न केवल पारिवारिक मूल्यों के परिवर्तन की बात आती है अपितु पीढ़ियों के बीच बदलते मूल्यों और अंतराल की भी बात आती है। आज का समय इतना जटिल हो गया कि एक ही परिवार के सदस्य आपस में अजनबी बने रहते हैं,एक ही छत के नीचे रहने के बावजूद भी अलगाव की

भावना से ग्रसित रहते हैं। आपसी सम्बन्धों के तार ऐसा लगता है कि वह कहीं से कट से गए हैं। दो पीढ़ियों के मध्य वैचारिकता में इतना अंतराल आ जाता है कि दोनों के मध्य सामंजस्य बैठा पाना आसान नहीं हो पाता –" **लेकिन अब कल और आज के तरीके से बिलकुल नहीं सोंचा जा सकता। तालमेल खत्म हो गया है या बिलकुल नया तालमेल बन गया है ।**"3इस प्रकार परंपरा से प्राप्त जो मूल्य हैं उनमे और आज के नवीन मूल्यों के बीच टकराहट उत्पन्न होती है ।

'संबंध' कहानी रिश्तों मे आए हुये परिवर्तनों का सूचन करती है । कथनायक 'मैं' अपनी बेरोजगारी से तंग आ जाता है। उसकी दिनचर्या एक सी न होकर कभी निराशा में तो कभी प्रसन्नता में व्यतीत होती है। तनाव एवं निराशा भरी जिंदगी उसके मन को अवसादग्रस्त बना देती है; इसके फलस्वरूप वह अपने पारिवारिक सम्बन्धों के प्रति उदासीन होने लगता है। एक तरफ माँ है जो उसके एवं छोटे भाई के प्रति चिंतित है और कथनायक भी उसके सिक्त से सिंचित होता है तो कभी उससे नाराज । तो दूसरी ओर शारीरिक एवं मानसिक रूप से बीमार भाई है जो उसकी नजर में बेकार का व्यक्ति है। कभी कभी वह भाई के प्रति सहानुभूति भी जताता है परंतु यह क्षणिक होता है। अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से इतना आक्रांत हो उठता है और सोंचने लगता है- " **लेकिन हकीकत यह है कि मैं काफी देर बाद भी यही चाहता रहा कि वह आत्महत्या कर ले और एक बहुत ही घिसटती हुयी समस्या का समाधान हो जाए ।**"4

आज का मनुष्य अपनी जीवन शैली और तेजी से बदल रहे सामाजिक मूल्यों के कारण अपनी संवेदनाओ से दिन प्रतिदिन दूर होता जा रहा है। वह वर्तमान समस्याओं से इतना आक्रांत हो उठता है कि अपने परिवार के प्रति अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व को भी भूल जाता है और सम्बन्धों में अलगाव आने शुरू हो जाते हैं। **'संबंध'** कहानी मे इसी बात को ज्ञानरंजन ने दिखने का प्रयास किया है कि पारिवारिक मूल्यों में किस तरह के परिवर्तन आने शुरू हो गए हैं। माँ जो अपने दोनों पुत्रों को जीवित देखना चाहती है, बीमार पुत्र के प्रति ममत्व अधिक है और वह इसलिए अधिक है क्योंकि माँ होने का उसे अहसास है। भाई है जो एक दूसरे से कटे हुये है, एक दूसरे की पीड़ा, समस्या आदि से कोई लेना देना नहीं है, छुटकारा चाहते हैं- भले ही मौत के द्वारा क्यों ना हो।

इसी क्रम में **'शेष होते हुये'** कहानी अपना अलग ही स्थान रखती है। संयुक्त परिवार के मूल्यों में किस तरह से तीव्रतर परिवर्तन आ रहे हैं; यह इस कहानी में देखा जा सकता है। बाहरी तौर पर देखा जाये तो इसमें एक ही घर दिखाई देता है परंतु घर के अंदर भी कई घर हैं और ये घर प्रत्येक दूसरे घर से पृथक अपनी मानसिकता रखता है । कहानी का मुख्य पात्र 'मझला' जब घर लौटता है तो वह घर का कुछ अलग ही रूप पता है। बड़े भाई ने, बहन ने, छोटे भाई ने घर के अपनी अपनी सुविधा के अनुसार कई भाग कर रखे हैं। घर का घर का प्रत्येक सदस्य एक दूसरे से इस प्रकार कटा हुआ है जैसे वे एक परिवार के सदस्य न होकर अलग अलग परिवार के हों। उनमें अजनबीपन एवं अलगाव वृत्ति है । मझले को यह देखकर काफी निराशा होती है। वह इसके कारणों को ढूँढने की कोशिश करता है, परंतु वह खुद उनमें फंस जाता है। यहाँ तक कि वह खुद को उस घर में एक अजनबी की तरह पाता है। उसे सारे रिश्तों में कुछ परिवर्तित सा दिखता है है। वह सोंचता है- " **एक ही घर में कई घर हो गए हैं । निजी व्यवस्था की प्रवृत्ति कुछ लोगों में छोटे पैमाने पर अंदर ही अंदर प्रयत्नशील है। ..... एक अजीब नकली ढंग से सब व्यतीत हो रहा है । ...... घर अंदर अंदर खंडित हो रहा है।**5 **"आँगन में अंधेरा है।"6-** प्रतीक है परिवार के मूल्यों के भविष्य का। परिवार दिन प्रतिदिन विघटित होते जा रहे हैं और दिशाहीन लक्ष्य की ओर बेतहाशा दौड़ते जा रहे हैं। संयुक्त परिवार की गरिमा विखंडित होकर एकल परिवार की ओर

अग्रसर होती जा रही है। परंपरागत पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन आने लगे हैं जिनके फलस्वरूप रिश्तों की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न लगने लगे हैं। इसी क्रम में ज्ञानरंजन की अन्य कहानियों- **'कलह', यात्रा, 'फेंस के इधर और उधर'** आदि में यह परिवर्तन दिखाई देता है। इस संदर्भ में डॉ पुष्पपाल सिंह का यह कथन दृष्टव्य है – " **आज मानवीय रिश्ते उसी रूप में मान्य नहीं रहे जैसे पहले थे। संयुक्त परिवार के विघटन और रोजो रोटी की तलाश परिवार के सदस्यों का बाहर जाकर बस जाना आदि के परिणामस्वरूप परिवार के सदस्य अपनी छोटी- छोटी इकाइयों तक ही अपने को सीमित रखने लगे। मानवीय संवेदना पर अर्थ का स्वार्थ हावी होकर बहुत सारे आत्मिक संबंधों को बेमानी या बेमतलब का बोझ देने की रस्म सी बना रहा है । माँ –बाप, पिता-पुत्री, भाई-बहन, पति-पत्नी , भाई –भाई के बीच अनाम दूरियाँ आ गयी हैं जिसके कारण सब संबंध दरकने लगे हैं ।**"7

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक मूल्यों के परिवर्तन के साथ ही साथ दो पीढ़ी के मध्य के मूल्यों मे भी परिवर्तन देखने को मिलता है। एक ओर पुरानी पीढ़ी अपने परंपरा से प्राप्त संस्कार जनित मूल्यों को छोडना नहीं चाहती, उसे ज्यों का त्यों बनाए रखना चाहती है तो वही दूसरी ओर नयी पीढ़ी आधुनिक भावबोध एवं वैज्ञानिक विचारधारा से प्रभावित होने के कारण परंपरागत मूल्यों को नकारती है। उसके लिए ये मूल्य खोखले, सारहीन एवं पिछड़ेपन का प्रतीक हैं। पुराने मूल्यों में उन्हे अंध-श्रद्धा का भाव एवं अवनति नजर आती है। इसका कारण यह भी है कि आज की पीढ़ी काफी हद तक पाश्चात्य संस्कृति एवं उसके मूल्यों से अत्यधिक प्रभावित है, जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता, स्वच्छंदता, आधुनिक बोध एवं परंपरा का विद्रोह है। और ऐसा इसलिए है कि नवीनता की स्थापना प्राचीनता का खंडन करने पर ही संभव है। आज की पीढ़ी के लिए प्राचीन आदर्शों का कोई अर्थ ही नहीं रह गया है। उसके लिए उसका यथार्थ ही उसका सबसे बड़ा आदर्श है। "**आज का व्यक्ति यथार्थ में विश्वास करता है और यथार्थ जीवन जीना चाहता है। उसके लिए ऊंचे आदर्शों का कोई मूल्य नहीं रह गया है, जिनका जीवन में उपयोग ही न किया जा सकता हो ।----प्रत्येक नई पीढ़ी का जागरूक व्यक्ति अपने समय की नब्ज को पहचानता है और झूठे आदर्शों का विरोध कर ही लेता है। कुछ नवीन मूल्यों की स्थापना धीरे धीरे हो ही जाती है।**"8 ज्ञान की कहानियों के अधिकांश पात्र इसी विचारधारा के पोषक दिखाई पड़ते हैं। इनमें पुरातन एवं अद्यतन मूल्यों को लेकर द्वंद्व हैं। न तो ये पूर्ण रूप से पुराने मूल्यों को छोंड़ पाते है और ना ही नए का स्वीकार कर पाते हैं। इस संदर्भ में **'अमरूद के पेड़', 'फेंस के इधर और उधर', 'पिता', 'गोपनीयता', 'कलह', 'बहिर्गमन'** आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। '**अमरूद के पेड़**' में दो पीढ़ियों के विश्वासों का संघर्ष है। माँ है जो अमरूद के पेड़ को घर के सामने होने पर उसे अशुभ मानती है। बेटा है जिसकी कोमल संवेदनाएं अमरूद के पेड़ के साथ जुड़ी हुयी हैं । उसका मन कतई यह मानने के लिए तैयार नहीं होता कि अमरूद के पेड़ का घर की शुभ या अशुभ घटनाओं से सरोकार है । एक तरफ उसकी आधुनिक सोंच है जो उसे पुराने ख्यालातों से दूर करते हैं तो दूसरी तरफ माँ का अंधविश्वास है । दोनों के मूल्यों में संघर्ष होता है। यहाँ पर मुख्य रूप से संघर्ष देखें तो पीढ़ियों के अंतराल से उत्पन्न संघर्ष है। नई पीढ़ी ने तमाम प्रकार की सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर आधुनिकता को अपना लिया है। परंतु माँ और पिता के विचार यथावत ही रहते हैं। वे अमरूद को अशुभ मानकर उसे कटा देते हैं। कथानायक यह देख कर दुखी होता है। और सोंचता है...." **यह बात इतनी बुरी नहीं थी कि अमरूद के पेड़ को काट कर उसकी जगह एक ओर गुलदाऊदी और दूसरी ओर केले की क्यारियाँ बना ली गयी हैं बल्कि चुनौती इस बात की थी कि हम लोगों में जब धीरे**

धीरे जिंदगी की बुलंदी विकसित हो रही थी तभी माँ को रूढ़ि और अशुभ के मिथ्या भय ने पराजित कर दिया। शायद माँ की हम संताने, उन्हें अशुभ से लड़ सक्ने की अपनी सामर्थ्य का आश्वासन नहीं दे सकी थी। "9 कथानायक के ये कथन यह तो साबित कर ही देते है कि नई पीढ़ी तो सहजता के साथ नवीनता को स्वीकार कर रही है परंतु पुरानी पीढ़ी अभी भी उसी में जीना चाहती है।

'पिता' और **'फंस के इधर और उधर'** में भी यही बात दृष्टिगत होती है। 'पिता' कहानी में पिता और पुत्र की मानसिकता में वैचारिक स्तर पर संघर्ष दिखाया गया है। पुत्र चाहता है कि पिता आधुनिक सुख सुविधाओं को अपना ले, पुरानी मान्यताओं को छोंड़ दे, परंतु पिता अपने संस्कारगत मूल्यों को छोंड़ना नहीं चाहते। पुत्र को पिता के प्रति प्रेम है लेकिन परिस्थितियों के वश में होकर वह कभी कभी पिता के प्रति क्षोभ से भर उठता है। पिता प्रतीक है पुरानी मान्यताओं और मूल्यों का और पुत्र नई सोंच और नए मूल्यों का। दोनों पीढ़ियो के मध्य वैचारिक संघर्ष उत्पन्न होता है। आज की युवा पीढ़ी अपने परंपरागत मूल्यों को छोंड़कर नए मूल्यों को किस तरह से स्वीकार कर रही है, यह इस कथन से स्पष्ट हो जाता है –**'वे पुत्र जो पिता के लिए कुल्लू का सेव मंगाते है और दिल्ली एम्पोरियम से बढ़िया धोतियाँ मंगाकर उन्हें पहनाने का उत्साह रखते थे, अब तेजी से पिता विरोधी होते जा रहें हैं।**'10तो दूसरी ओर पुत्र यह सोंचता है – **'हमारे समाज में बड़े-बूढ़े लोग जैसे बहू – बेटियों कि निजी जीवन को स्वच्छंद रहने देने के लिए अपना अधिकांश समय व्यतीत कर देते हैं, क्या पिता ने भी वैसा ही करना तो नहीं शुरू कर दिया है। ---पिता, तुम हमारा निषेध करते हो । तुम ढोंगी हो, अहंकारी बज्र अहंकारी।'11**

'फंस के इधर और उधर' में भी कुछ ऐसा ही पुट देखने को मिलता है। इस कहानी में भी दो विचारधाराओं- पुरातन एवं अद्यतन का वैचारिक संघर्ष दिखाया गया है जो मूल्यों में परिवर्तन की सूचना देते हैं। मुख्यपात्र 'मैं' का परिवार परंपरागत रूढ़ियों से युक्त है और उसके पड़ोस में बस रहे आर्य समाजी परिवार आधुनिक विचार धारा से युक्त है । 'मैं के परिवार को यह आधुनिकता नागवार गुजरती है- मसलन लड़की का खुलकर हँसना , पति पत्नी –पुत्री के सहज एवं खुला रिश्ता, पड़ोसियों से किसी भी प्रकार की सहायता न लेना, सादगी से लड़की की शादी हो जाना । ये लोग चाहते हैं की सामने वाला परिवार रूढ़ियों एवं शिष्टाचार को माने। पूरी कहानी में 'मैं' दोनों परिवारों की तुलना ककरता है परंतु खुद शिक्षित होते हुये भी वह अपने मध्य वर्गीय संस्कारों को नहीं छोड़ पाता। कभी कभी वह आधुनिक मूल्यों की तरफ आकर्षित भी होता है परंतु अपना नहीं पाता। उसके मूल्य उसके पिता की विचारधारा से कुछ अलग ही प्रकार के हैं। उन्हें पुराने मूल्यों के टूटने का बड़ा दर्द है। वे सोंचते है –**"पिता को बड़ा दर्द हुआ की आज वैसा नहीं रह गया है। पुराना जमाना जा रहा है और आदमी का दिल मशीन हो गया है, मशीन "12**

ज्ञान की अधिकांश कहानियों में प्रेम के बदलते हुये स्वरूप का चित्रण देखेने को मिलता है। इस संदर्भ में **'दिवास्वप्नी'** **'खलनायिका और बारूद के फूल'**, **'सीमाएं'**, **'छलांग'**, **'हास्यरस'**, **'दाम्पत्य'**, **'चुप्पियाँ'** आदि कहानियाँ देखी जा सकती है। यद्यपि ये कहानियाँ प्रेम के विविध स्वरूपों यथा- किशोर वय का प्रेम , दाम्पत्य प्रेम, युवास्था का प्रेम आदि का चित्रण करती हैं फिर भी इन सभी स्वरूपों में प्रेम में आए हुये परिवर्तनों को बताती हैं।

'खलनायिका और बारूद के फूल' कहानी में यह दिखाने की कोशिश की गई है कि आज की युवा पीढ़ी खासकर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्र – छात्राओं में प्रेम विषयक धारणा किस तरह

परिवर्तित हो गयी है। नायिका (सुमन) कहानी के मुख्य पात्र 'मैं' से बेहद प्रेम करती है साथ जीने मरने की कसमें खाती है, शादी को भी तैयार हो जाती है लेकिन कुछ समय बाद वह शादी से इसलिए ना कर देती है कि उसे पति के रूप में कमाने वाला लड़का मिल रहा है । इसके बावजूद भी वह 'मैं' से मिलती है और स्पर्श सुख भी प्राप्त करती है और उस से एक ऐसी कहानी लिखने को कहती है जिससे पुरुष के प्रेम पर अविश्वास उत्पन्न हो जाए ताकि उसकी छोटी बहन प्रेम विवाह ना कर पाये। उसकी मानसिकता को हम इस रूप मे देखते हैं- **"मुझे गलत मत समझना, मेरा प्रेम आत्मा का है। वह मरते दम तक क्या जन्म-जन्मांतर तक रहेगा । उसने कहा कि वह मेरे अलावा किसी और को अपना हृदय नहीं दे सकती भले ही तन देना पड़े। ---और देखो, मुझे अब किसी कहानी –वहानी मे चित्रित मत करना। मेरी शादी होने वाली है, नाहक क्यो किसी को शक हो** ?"13 यहाँ प्रेम तो कहीं नहीं है परंतु सम्बन्धों मे स्वार्थ हावी होता हुआ अवश्य नजर आ रहा है। **'छलांग'** कहानी किशोर और एकतरफा प्रेम को चित्रित करती कहानी है जहां किशोर वय का लड़का प्रौढ़ा श्रीमती ज्वेल के प्रति आकर्षित है। वह यदा कदा श्रीमती ज्वेल के शरीर से खिलवाड़ करता है, कामुक दृष्टि से देखता है। श्रीमती ज्वेल को यह सब पता होने के बावजूद भी वह उसे रोकती नहीं हैं। शायद उन्हें भी इसमे मजा आता है । वह श्रीमती ज्वेल की छूट को उनका प्रेम समझ बैठता है । अंततः बाद में उसे अपनी भूल का अहसास होता है और वह उससे निकलने की कोशिश करता है। **'चुप्पियाँ'** कहानी में करण मीनू से प्रेम करता है जो उसके फूफा द्वारा गोद ली गयी है। इस रिश्ते वह उसकी फुफेरी बहन हुयी। यहाँ भी हम रिश्तों में आयी हुयी सोंच में परिवर्तन देखते हैं। **'दाम्पत्य'** में पति –पत्नी के विचारों में तालमेल न बैठ पाने के कारण उनके प्रेम सम्बन्धों में परिवर्तन आता है । विवाह के बाद प्रेम संबंधों में किस तरह का परिवर्तन आता है यह **'हास्यरस' में** देखा जा सकता है। कहानी के मुख्य पात्र **'मैं'** की शादी उसी लड़की के साथ होती है जिसे वह पहले प्रेम करता था। शादी के बाद वह महसूस करने लगता है कि उसका प्रेम वैसा नहीं जैसा पहले था । उसमें परिवर्तन आ गया है। वह अपने को शिखा (पत्नी) के समक्ष पराजित पाता है और उससे बदला लेने की सोंचता है । वह उसके प्रति शंकालू भी हो उठता है –**" ऐसी स्त्रियों (पत्नी) के चरित्र का क्या भरोसा किया जाये? कब किस दूसरे पर फिसल पड़ें?"**14 यहाँ मुख्य पात्र के कथन इस बात के संकेत है कि पति पत्नी के बीच जो पहले दाम्पत्य मूल्य थे अब धीरे धीरे उनमें परिवर्तन आने लगे हैं।

'दिवास्वप्नी' और 'रचना प्रक्रिया' में भी प्रेम विषयक मूल्यों में परिवर्तन की बात की गयी है । दिवास्वप्नी कहानी का ममुख्य पात्र मीरा से प्रेम करता है जिसकी शादी हो गयी है । मीरा भी उसे स्वार्थवश प्रेम भरे पत्र लिखती है। वह मीरा के लिए अपना सब कुछ छोड़ कर उससे मिलने के लिए पहाड़ों पर जाता है परंतु मीरा नहीं आती और उसे न आने का कारण बताती है कि पति की इच्छा कश्मीर जाने की है। उसे इस बात से काफी धक्का लगता है और उसे अपना प्रेम एक मज़ाक सा लगने लगता है। **'रचना प्रक्रिया'** में कस्बाई प्रेम और एवं शहरी प्रेम के बीच अंतर बताते हुये प्रेम में आए हुए बदलाव की चर्चा की गयी है । शहरी प्रेम में यदि प्रेम के दौरान यदि लड़की का कौमार्य भंग हो जाता है तो उसे कोई ज्यादा चिंता नहीं होती, आत्महत्या नहीं करती। यदि एक से प्रेम टूट जाता है या मन भर जाता है तो किसी दूसरे या तीसरे से कर लेती है। इस प्रकार यहाँ प्रेम स्वच्छंद होता है, ना कोई मर्यादा होती है और ना ही मूल्य । प्रेम आत्मीय ना होकर मात्र शारीरिक सुख देने वाला संबंध या फैशन सा बन गया है। कस्बाई प्रेम में स्वतंत्रता कम होती है। कहानीकार के शब्दों में –**"अब तो भुक्कड़ पर भुक्कड़ निकले आ रहें है । तमाशा देखिये स्त्री लड्डू में और पुरुष**

चाट में तब्दील हो गया है ।"15 यह बदलाव शहरी प्रेम में अधिक परिलक्षित होता है। **'सीमाएं'** कहानी में इस चीज को देख कर आश्चर्य होता है कि खुद प्रेम करने वाला व्यक्ति अपनी छोटी बहन एवं दोस्त के प्रेम का घोर विरोधी हो जाता है । जब अपने प्रेम की बात आती है तब वह घोर दार्शनिक बन जाता है और समाज की मान्यताओं को सड़ी गली कहकर भर्त्सना करता है परंतु जब उसे खुद बहन के प्रेम का निर्णय करना होता है तब वह इन्हीं मान्यताओं का सहारा लेता है। यहाँ भी मूल्य परिवर्तन की बात आती है ।

ज्ञानरंजन की प्रेम विषयक कहानी का विश्लेषण करने पर यह तथ्य सामने आता है कि युग की मांग के अनुसार प्रेम के परंपरागत अर्थ एवं उसके मूल्यों में परिवर्तन आया है। इस तथ्य के आलोक में डॉ मोनिका हारित का यह कथन दृष्टव्य है-**"प्रेम के अर्थ व संदर्भ अब बदल गए हैं। अब प्रेम हृदय का रागात्मक तत्व न रहकर खालीपन व निठल्ले से उत्पन्न मायूसी व निराशा को दूर करने का साधन बन गया है ।"**16 इस कथन के आलोक में यह कहा जा सकता है कि ज्ञानरंजन की कहानियों में प्रेम का आदर्श रूप तो परिलक्षित होता है परंतु उसमें समय की आवश्यकता के अनुसार बदला हुआ रूप भी है। ज्ञान के पात्र आदर्श के धरातल पर न रहकर यथार्थ के धरातल पर रहते हैं। इसलिए उनको प्रेम के बदलते हुये मूल्यों को स्वीकार करने में कोई ज्यादा हिचकिचाहट नहीं होती ।

परिवर्तित होते मूल्यों के संदर्भ में ज्ञानरंजन की कहानियों के अध्ययन से यह बात सामने आती है कि उनकी कहानियों में किसी न किसी स्तर पर मूल्यों में परिवर्तन आता है फिर चाहे वह पारिवारिक, दो पीढ़ियों के मध्य का हो, या सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, प्रेमगत मूल्यों का स्तर हो। परिवर्तन संसार का एक अनिवार्य नियम है और यह परिवर्तन विकास का सूचक भी होता है। मूल्यों में परिवर्तन होने से समाज में अनुकूल एवं प्रतिकूल दोनों प्रकार के प्रभाव पड़ते है । इस संदर्भ में डॉ॰ श्रीमती प्रेम सिंह का कथन देखा जा सकता है-**"कहीं टूटते हुये मूल्यों के प्रति पीड़ा का स्वर सुनाई पड़ता है तो कहीं इस विघटन का समर्थन किया जाता है। कहीं इनके प्रति मन में संशय उठता है तो कहीं इसका स्पष्ट विरोध किया जाता है। कहीं नवीन जीवन मूल्यों की सर्जना के संकेत मिलते है। परंपरागत जीवन मूल्यों के विघटन तथा नवीन जीवन मूल्यों के उदय की स्थिति में संघर्ष का होना सहज स्वाभाविक है।"**17ज्ञान की कहानियों में यही बात और अधिक स्पष्ट होती है। उनकी कहानियों में जीवन मूल्यों में संघर्ष एवं परस्पर टकराहट जिसके फलस्वरूप आने वाली पीढ़ी में द्वंद्व व संशय की स्थिति सामने आती है। नवीन जीवन मूल्यों के समक्ष पुराने मूल्यों की कोई अहमियत ना होने के कारण आदर्श और यथार्थ का संघर्ष होता है जिसमें यथार्थ का पलड़ा भारी रहता है। ज्ञान की कहानी चूंकि यथार्थ जीवन का प्रतिनिधित्व करती है इसलिए उसमें जीवन के यथार्थपरक मूल्यों का बाहुल्य है। इस संदर्भ में 'पिता', सीमाएं', 'अमरूद के पेड़', 'फेंस के इधर और उधर', 'आत्महत्या', 'एक नमूना सार्थक दिन' आदि को लिया जा सकता है जहाँ मूल्यों में परिवर्तन इसलिए आता है क्योंकि यथार्थ जीवन में उसकी आवश्यकता है। दूसरी वस्तु यह भी है कि ज्ञान की कहानियों में शाश्वत मूल्यों में परिवर्तन की काफी कम गुंजाइश की गयी है और इसका कारण यह भी है कि शाश्वत मूल्य हर युग और समाज में हमेशा एक से रहते है- आंशिक परिवर्तन के साथ। इन परिवर्तित मूल्यों से वर्तमान पीढ़ी पर कैसा प्रभाव पड़ा है और भविष्य में क्या पड़ सकता है इसकी ओर भी संकेत किया गया है। इन परिवर्तित मूल्यों के साथ ज्ञानरंजन ने बड़ी ही सहजता के साथ अपने पात्रों का सामंजस्य बैठाया है और उनको इस नए भाव-बोध के साथ जोड़ने का प्रयास भी किया है।

संदर्भ

1 ज्ञानरंजन –‘क्षणजीवी’ –सपना नहीं,पृ 43

2वही, पृ 43-44

3 संबंध पृ,153

4 वही 153

5 शेष होते हुये 141,144,149

6 वही 140

7 डॉ पुष्पपाल सिंह : समकालीन कहानी युग बोध का संदर्भ पृ 93

8 डॉ श्रीमती प्रेम सिंह : सठोत्तर कहानी और परिवर्तित मूल्य पृ 102

9 ज्ञानरंजन –‘अमरूद के पेड़’ –सपना नहीं ,पृ 7

10 ज्ञानरंजन –‘पिता’ –सपना नहीं ,पृ 162

11 ज्ञानरंजन –‘पिता’ –सपना नहीं ,पृ 164

12 ज्ञानरंजन –‘फेंस के इधर और उधर’ –सपना नहीं ,पृ 137

13 ज्ञानरंजन –‘खलनायिका और बारूद के फूल’ –सपना नहीं ,पृ 63

14 ज्ञानरंजन –‘हास्य रस’ –सपना नहीं ,पृ 110

15 ज्ञानरंजन –‘रचना प्रक्रिया’ –सपना नहीं ,पृ 148

16 डॉ॰ मोनिका हारित: समकालीन हिन्दी कहानी में समाज संरचना, पृ 127

17 डॉ॰ श्रीमती प्रेम सिंह: साठोत्तरी कहानी और परिवर्तित मूल्य, पृ 98

****

प्रेमनारायण,

शोधार्थी – हिन्दी विभाग

गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

Copyright © 2012- 2016 KCG. All Rights Reserved. | Powered By : Knowledge Consortium of Gujarat